

Padma Shri



SMT. PRITIKANA GOSWAMI

Smt. Pritikana Goswami is a renowned Master artisan & craftswoman of Nakshi Kantha.

2. Born on 15th October, 1959, Smt. Goswami after completion of her matriculation examination was looking for meaningful work to support her family. With no financial backing from the family, she started doing odd jobs related to embroidery. Smt. Goswami was encouraged by Ms. Ruby Pal Chowdhury, Chairperson of Crafts Council of West Bengal in 1990 to open an artisan training cum workshop in rural south 24 Parganas, which was her first major break into Nakshi Kantha.

3. Smt. Goswami moved sonarpur in south of Kolkata in 2000. Her centre taught women traditional Kantha embroidery called Nakshi Kantha. In 2016 she took up the role of chief mentor & memory officer at Hushnohana. Today, the Kamrabad centre has 18 skilled craftswomen. She took up various training workshop on Kantha Stitch under the scheme Guru Sishya Parampara under affiliation of Government of India. She also received certificate from FICCI Ladies Organisation, supported by Hans Seidel Foundation Germany on Entrepreneurship Development Program for Craft Person. Under her umbrella almost 300 students have thrived and found direction. She started touring the country to present her skilled craft at many fairs and exhibitions. Alongside she attained many Workshops on craft and culture at many countries such as United States of America, Romania etc. In 2006 she became associated with a Japanese project, which is an extension of the Crafts Council of West Bengal and is still running in Sonarpur. She conducted the Culture Crafts Conservation Convention as main artist at National Bal Bhawan.

4. Smt. Goswami has been honoured with many awards. She won Special prize from West Bengal Government on Karu Shilpa Protijogita on 1996-97 and first prize in 1997-98. She won National Award in 2001 for the craftsmanship by the then President of India. Later she was also recognized as master Craftswoman.



श्रीमती प्रीतिकना गोस्वामी

श्रीमती प्रीतिकना गोस्वामी नक्शी कांथा की एक प्रसिद्ध कुशल कारीगर और शिल्प महिला हैं।

2. 15 अक्टूबर, 1959 को जन्मीं, श्रीमती गोस्वामी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करनेके बाद अपने परिवार की मदद के लिए उपयोगी काम की तलाश में थीं। परिवार से कोई वित्तीय सहायता न मिलने के कारण, उन्होंने कढ़ाई से संबंधित छोटे-मोटे काम करने शुरू कर दिए। श्रीमती गोस्वामी को 1990 में पश्चिम बंगाल की शिल्प परिषद की अध्यक्ष सुश्री रूबी पाल चौधरी ने ग्रामीण दक्षिण 24 परगना में एक कारीगर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला खोलने के लिए प्रोत्साहित किया, जो नक्शी कांथा में उनका पहला बड़ा अवसर था।
3. श्रीमती गोस्वामी 2000 में कोलकाता के दक्षिण में सोनारपुर आ गईं। उनके केंद्र में महिलाओं को पारंपरिक कांथा कढ़ाई, जिसे नक्शी कांथा कहा जाता है, सिखाई जाती हैं। वर्ष 2016 में, उन्होंने हुशनोहाना में मुख्य संरक्षक और मेमोरी ऑफिसर की भूमिका निभाई। आज, कमराबाद केंद्र में 18 कुशल कारीगर हैं। उन्होंने भारत सरकार की गुरु शिष्य परंपरा योजना के तहत कांथा सिलाई पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाएं कीं। उन्हें शिल्पकार उद्यमिता विकास कार्यक्रम पर हंस सीडेल फाउंडेशन, जर्मनी से सहयोग प्राप्त, फिक्की लेडीज ऑर्गनाइजेशन से प्रमाणपत्र भी मिला है। उनकी छत्रछाया में लगभग 300 छात्रों ने उन्नति और मार्गदर्शन प्राप्त किया है। उन्होंने कई मेलों और प्रदर्शनियों में अपना कुशल शिल्प प्रस्तुत करने के लिए देश की यात्रा शुरू कर दी। साथ ही उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, रोमानिया आदि जैसे कई देशों में शिल्प और संस्कृति पर कई कार्यशालाएं कीं। वर्ष 2006 में वह पश्चिम बंगाल की शिल्प परिषद का विस्तार, एक जापानी परियोजना से जुड़ीं, जो अभी भी सोनारपुर में चल रही है। उन्होंने राष्ट्रीय बाल भवन में मुख्य कलाकार के रूप में संस्कृति शिल्प संरक्षण सम्मेलन का संचालन किया।
4. श्रीमती गोस्वामी को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने 1996-97 में कारु शिल्प प्रतियोगिता में पश्चिम बंगाल सरकार से विशेष पुरस्कार और 1997-98 में प्रथम पुरस्कार जीता। उन्होंने 2001 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा शिल्प कौशल के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। बाद में उन्हें शिल्प गुरु के रूप में भी सम्मानित किया गया।